Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में भारत का उभरता हुआ नेतृत्व

डॉ. सुशीला देवी यादव सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

"वसुधैव कुटुंबकम" भारतीय विदेश नीति का आधार है इसी मूल्य में निष्ठा रखते हुए भारत ने हमेशा एक कुशल जिम्मेदार नेतृत्व की भूमिका निभाई है। आजादी के बाद से ही भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों एवं विदेश नीति के आदर्शों को ध्यान में रखकर ' पड़ोसी पहले की नीति ' को अपनाते हुए एशिया के देशों को अधिक महत्व दिया।भारत ने विश्व राजनीति में वैश्विक मुद्दों का शांतिपूर्ण समाधान कर विश्व में शांति सौहार्द का वातावरण निर्मित करने में सक्रिय नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई है।जैसे जैसे विश्व में नई-नई चुनौतियाँ और अवसर उत्पन्न हो रहे है, भारत का प्रभाव तथा इसकी भूमिका में लगातार वृद्धि हो रही है, पूरे विश्व में शक्ति के पुनर्संतुलन का दौर है, जिसमें भविष्य की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति व सहयोग को आकार देने में भारत की भूमिका प्रमुख होती जा रही है।विश्व राजनीति में अपनी कुशल व जिम्मेदार नेतृत्वक्षमता के कारण भारत को G20 जैसे वैश्विक महामंच की अध्यक्षता सौंपी गई है।

KEYWORDS:

ग्लोबल, G20, नेतृत्व, भू राजनीति।

शोध का उद्देश्य

शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है-

- ग्लोबल साउथ राजनीति में भारत के नेतृत्व का अध्ययन करना।
- ग्लोबल साउथ में भारत के सम्मुख उपस्थित अवसरों व चुनौतियों का अध्ययन करना
- विश्व राजनीति में भारत के उभरते हुए नेतृत्व का अध्ययन करना।

शोध का महत्व

- भारत,इंडोनेशिया,ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देश विश्व की आबादी और अर्थव्यवस्थाओं के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- भारत **G20 शिखर सम्मेलन** की मेज़बानी कर वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं **में ग्लोबल साउथ के अधिक नेतृत्व** तथा प्रभाव को इंगित करता है।
- **रूस-यूक्रेन संघर्ष** का वैश्विक आर्थिक प्रभाव पड़ा। जिसने वैश्विक मामलों की परस्पर संबद्धता एवं अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में ग्लोबल साउथ के महत्त्व पर और अधिक ध्यान आकृष्ट किया।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि में वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक शोध प्रारूप का प्रयोग किया हैं तथ्यों को संकलित करने के लिए द्वितीयक स्रोतों की सहायता ली गई हैं द्वितीय आंकड़ों का संकलन सरकारी और गैर सरकारी विभागों द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं एवं रिपोर्ट्स द्वारा किया गया। सब तथ्य,आंकड़े एवं सूचनाएँ अखबारों समाचार पत्र पत्रिकाओं मैगजीन वेबसाइट से लिए गए।

परिचय

भारत ने 'पंचशील सिद्धांत व गुटनिरपेक्ष आंदोलन' के माध्यम से विश्व को एक परिवार के रूप में बांधने का प्रयास किया और हर परिस्थिति में विश्व राजनीति में एक कुशल जिम्मेदार नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई और विश्व को सही दिशा व मार्गदर्शन दिया। 200 वर्षों के औपनिवेशिक शासन के बाद भारत ने खुद को विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र स्थापित किया पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में "संसार के राष्ट्र तथा लोगों को हम अभिवादन करते हैं और यह प्रतिज्ञा करते हैं की शांति, स्वतंत्रता, प्रजातंत्र को अग्रसर करने में हम उनके साथ सहयोग करेंगे।" आजादी के बाद से ही भारत ने साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, शस्त्रीकरण, नस्ल भेद आदि के विरुद्ध विश्व राजनीति को नेतृत्व प्रदान किया। शीत युद्ध के समय भारत ने गुटनिरपेक्ष की स्थापना कर तीसरे विश्व के देशों को तीसरे विश्व युद्ध से बचाया। आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर भी भारत ने हमेशा जिम्मेदार नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई है। कोविड के दौरान भी भारत ने कोविड वैक्सीन को अपने पड़ोसी देशों में भेज 'वैक्सीन मैत्री' कार्यक्रम का संचालन किया। रूस यूक्रेन युद्ध की समाप्ति के लिए भारत निरंतर प्रयासरत हैं। भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला देश है,पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ,विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और एक आध्यात्मिक शक्ति, बहुसंख्यक युवा आबादी वाला देश, जिम्मेदार परमाणु हथियार संपन्न देश,मजबूत सैन्य शक्ति, स्थिर एवं प्रबल इच्छा शक्ति संपन्न राजनीतिक नेतृत्व वाला देश हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में "जब भारत बढता है,तो दुनिया बढ़ती है। जब भारत में सुधार होता है,तो दुनिया बदल जाती है।"

ग्लोबल साउथ' एक परिचय

ग्लोबल साउथ शब्द का प्रयोग मोटे तौर पर उन देशों के संदर्भ में होना शुरू हुआ जो औद्योगीकरण के दौर से बाहर रह गए थे और पूंजीवादी एवं साम्यवादी देशों के साथ विचारधारा का टकराव रखते थे, जिसे शीत युद्ध ने प्रबल किया था। इसमें अधिकांशतः एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देश शामिल हैं। बड़ी आबादी, समृद्ध संस्कृतियों

और प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के कारण 'ग्लोबल साउथ' एक महत्त्वपूर्ण भूभाग है। **"थर्ड वर्ल्ड/तीसरी दुनिया" से "ग्लोबल साउथ" तक:** ग्लोबल साउथ शब्द को पहली बार वर्ष 1969 में राजनीतिक कार्यकर्त्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा दिया गया था। वर्ष 1991 में **सोवियत संघ के विघटन** के बाद इसमें तेज़ी आई, जो "**दूसरी दुनिया/सेकंड वर्ल्ड**" के अंत का प्रतीक था।पूर्व में विकासशील देशों को **आमतौर पर "तीसरी दुनिया"** कहा जाता था, यह शब्द **वर्ष 1952 में अल्फ्रेड सॉवी** द्वारा दिया गया था। यद्यपि यह शब्द **गरीबी, अस्थिरता** और **पश्चिमी मीडिया द्वारा प्रचारित नकारात्मक रूढ़िवादिता** से संबद्ध है। परिणामस्वरूप **"ग्लोबल साउथ" शब्द एक अधिक तटस्थ विकल्प के रूप में उभरा** हैं।

वर्तमान में ग्लोबल साउथ का बढ़ता महत्व

ग्लोबल साउथ के महत्व का इस बात से पता चलता है कि ग्लोबल साउथ में हाल के दशकों में धन और राजनीतिक परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। **विश्व बैंक** ने **आर्थिक शक्ति वितरण की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती** देते हुए **उत्तरी अटलांटिक से एशिया-प्रशांत क्षेत्र में "संपत्ति में बदलाव" की पहचान** की है।अनुमानों से संकेत मिलता है कि **वर्ष 2030 तक चार सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से तीन ग्लोबल साउथ के होंगे जिनमें चीन और भारत अग्रणी** होंगे। ग्लोबल साउथ के प्रयासों से **'नुकसान और क्षति कोष' की स्थापना की गई।** संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित **कोप 28** में **देश जलवायु परिवर्तन को कम करने पर चर्चा हेतु ग्लोबल साउथ के देशों की भूमिका अग्रणी रही। जी 7 शिखर सम्मेलन** के मेज़बान के रूप में जापान ने भारत, ब्राज़ील, वियतनाम, इंडोनेशिया, कोमोरोस और कुक द्वीप समूह जैसे विकासशील देशों को इस वार्ता में शामिल करने के लिये उल्लेखनीय प्रयास किया।इसे **ग्लोबल साउथ तक पहुँचने तथा विश्व के सबसे धनी देशों के बीच अधिक समावेशी संवाद की आवश्यकता के रूप में देखा जा सकता है।** दक्षिण अफ्रीका में आयोजित **ब्रिक्स शिखर सम्मेलन** में इसकी सदस्यता को पाँच से बढ़ाकर 11 कर दिया गया। इस विस्तार का प्रमुख कारण ग्लोबल साउथ के अधिक देशों को ब्रिक्स समूह में शामिल करना है, जो ग्लोबल साउथ के बढ़ते महत्त्व को रेखांकित करता है। क्यूबा के हवाना में आयोजित **जी-77 शिखर सम्मेलन वैश्विक मंच पर ग्लोबल साउथ के महत्त्व को प्रदर्शित करता है,** इसमें अहम मुद्दों पर चर्चा करने के लिये पर्याप्त संख्या में **विकासशील देश एक मंच पर एकजुट हुए** ।जी 20 में अफ्रीकी संघ का समावेश: **55 देशों वाले अफ्रीकी संघ** को जी20 में शामिल करना इस सम्मेलन के एक महत्त्वपूर्ण परिणाम के रूप में देखा जाता है जो वैश्विक मामलों में **अफ्रीकी देशों की बढ़ती मान्यता तथा उभरती वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में उनके दृष्टिकोण व योगदान को शामिल करने की आवश्यकता का संकेत देता है।**ग्लोबल साउथ की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का वैश्विक भू-राजनीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। **जिसे विशेषज्ञ "एशियाई सदी" कहते हैं उसमें** एशियाई देशों **की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।** इसके अतिरिक्त **"पोस्ट-वेस्टर्न वर्ल्ड"** की भी चर्चा की जाती है क्योंकि ग्लोबल साउथ का प्रभाव **ग्लोबल नॉर्थ के ऐतिहासिक प्रभुत्व** को चुनौती देता है। ये बदलाव विश्व मंच पर **ग्लोबल साउथ की बढ़ती मुखरता और प्रभाव को दर्शाते हैं।**

ग्लोबल साउथ के लिये भारत की पहल:

जनवरी 2023 में भारत द्वारा आयोजित **"वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट"** में भारतीय प्रधानमंत्री ने अन्य विकासशील देशों के विकास का समर्थन करने के लिये पाँच पहलों की घोषणा की।**"ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस"** विकास समाधानों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर शोध करेगा जिन्हें अन्य विकासशील देशों में लागू किया जा सकता है।**"ग्लोबल साउथ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव"** का उद्देश्य अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में भारतीय विशेषज्ञता को साझा करना है।**"आरोग्य मैत्री"** परियोजना प्राकृतिक आपदाओं या मानवीय संकटों से प्रभावित किसी भी विकासशील देश को आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति प्रदान करेगी।**"ग्लोबल साउथ यंग डिप्लोमैट्स फोरम"** विदेश मंत्रालयों के युवा अधिकारियों को जोड़ेगा। **"ग्लोबल साउथ स्कॉलरशिप"** विकासशील देशों के छात्रों को भारत में उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करेगी।

राष्ट्रवाद **और अंतर्राष्ट्रवाद को संतुलित करना:**भारत वैश्विक व्यवस्था के आधुनिकीकरण एवं लोकतंत्रीकरण के लिये और अधिक उल्लेखनीय तरीकों से योगदान कर रहा है। वर्तमान विश्व में राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रवाद के बीच संतुलन की तलाश करने के लिए **आवाज़ की एकता, उद्देश्य की एकता शीर्षक शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया** जो किसी भी देश के हितों के साथ-साथ वैश्विक दक्षिण के हितों की रक्षा करने में मदद करेगा। **सरल, विस्तार-योग्य और संवहनीय समाधानों की पहचान करना:**इसी कड़ी में भारत के द्वारा ग्लोबल साउथ के देशों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है ताकि गरीबी, सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा या मानव क्षमता निर्माण, इन पर काबू पाया जा सके। तेज़ आर्थिक विकास की इच्छा रखने वाले एक निम्न मध्यम आय वाले देश के रूप में भारत **'वैश्विक दक्षिण की आवाज़'** बनने का सुअवसर रखता है। G-20 की एकवर्षीय अध्यक्षता भारत के लिये वैश्विक दक्षिण को एकजुट करने का अवसर मिला भारत ने अफ्रीका संघ को जी 20 की सदस्यता दिलवाई।भारत और वैश्विक दक्षिण के अन्य देश एक साथ आए तथा साझा समस्याओं एवं चुनौतियों के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास किए गए ।जी 20 शिखर सम्मेलन में भारत और वैश्विक दक्षिण के अन्य देश अपनी चिंताओं को अभिव्यक्त किया और आर्थिक विकास, व्यापार, निवेश एवं विकास जैसे प्रमुख मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए । शिखर सम्मेलन भारत और वैश्विक दक्षिण के अन्य देशों के लिये अपने प्रयासों को समन्वित करने तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा देने एवं गरीबी को कम करने के उद्देश्य से क्रियान्वित पहलों पर सहयोग करने के लिये एक मंच के रूप में कार्य किया।

ग्लोबल साउथ के विकास में चुनौतियाँ:

- आर्थिक असमानता: ग्लोबल साउथ के कई देश अभी भी गरीबी और आर्थिक असमानता से जूझ रहे हैं, जिससे उनके लिये विकास संबंधी पहलों को लागू करना कठिन सिद्ध हो सकता है।
- राजनैतिक अस्थिरता: ग्लोबल साउथ के कई देशों में व्याप्त राजनीतिक अस्थिरता दीर्घकालिक विकास योजनाओं को क्रियान्वित करना कठिन बना सकती है और विदेशी निवेश के लिये प्रतिकूल वातावरण का भी निर्माण कर सकती है।
- आधारभूत संरचना की कमी: ग्लोबल साउथ के कई देशों में सड़कों, बंदरगाहों और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, जिससे विदेशी निवेश को आकर्षित करना तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा देना कठिन साबित हो सकता है।
- जलवायु परिवर्तन: ग्लोबल साउथ के कई देशों में जलवायु परिवर्तन एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है क्योंकि यह गरीबी एवं असमानता की मौजूदा स्थिति को और गंभीर बना सकती है तथा विकास के लिये नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकती है।

सीमित मानव क्षमता: कुशल मानव संसाधनों का अभाव और शिक्षा की कमी वैश्विक दक्षिण में विकास के मार्ग में प्रमुख चुनौतियों में से एक है।

हरित ऊर्जा कोष जारी करना:वैश्विक उत्सर्जन के प्रति वैश्विक उत्तरी देशों के उच्च योगदान के बावजूद वे **हरित ऊर्जा के वित्तपोषण** के लिये भुगतान करने की उपेक्षा कर रहे हैं, जिसके अंतिम पीड़ित कम विकसित देश हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव:रूस-यूक्रेन युद्ध ने **अल्प विकसित देशों** को गंभीर रूप से प्रभावित किया, जिससे भोजन, ऊर्जा और वित्त से संबंधित चिंताएँ बढ़ गईं, जिससे की विकास संभावनाओं को खतरा उत्पन्न हो गया।

चीन का हस्तक्षेप: चीन बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के ज़रिये ग्लोबल साउथ** में तेज़ी से अपनी पैठ बना रहा है।

अमेरिकी आधिपत्य:विश्व को अब **कई लोगों द्वारा बहुध्रुवीय माना जाता है,** लेकिन फिर भी केवल अमेरिका ही **अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर हावी है।**अमेरिका **विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है,** जिसका **वैश्विक वित्तीय बाज़ारों पर पर्याप्त प्रभाव है।** अमेरिकी डॉलर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिये प्रमुख मुद्रा बना हुआ है और **कई देशों द्वारा इसे आरक्षित मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाता है।**

संसाधनों तक अपर्याप्त पहुँच:ऐतिहासिक ग्लोबल नॉर्थ-साउथ **विचलन महत्त्वपूर्ण** विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता में व्यापक असमानताओं को दर्शाता है।उदाहरण के लिये औद्योगीकरण 1960 के दशक की शुरुआत

से ही उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के पक्ष में झुका हुआ है और इस संबंध में वैश्विक अभिसरण का कोई बड़ा सबूत नहीं मिला है।

निष्कर्ष:

जैसे-जैसे विश्व में नई-नई चुनौतियाँ और अवसर उत्पन्न हो रहे है, ग्लोबल साउथ में भारत का प्रभाव तथा इसकी भूमिका में लगातार वृद्धि हो रही है, वैश्विक शासन में न्यायसंगत प्रतिनिधित्व की भारत की मांग सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है। पूरे विश्व में शक्ति के पुनर्संतुलन का दौर है, जिसमें भविष्य की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति व सहयोग को आकार देने में भारत की भूमिका प्रमुख होती जा रही है

REFERENCES

1. https://www.drishtiias.com

2. https://visionias.in

3. आचार्य, अमिताव. "वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय संबंध (आईआर) और क्षेत्रीय दुनिया: अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के लिए एक नया एजेंडा।" अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन त्रैमासिक 58

4. आचार्य, अमिताव. "ग्लोबल साउथ के लिए आईआर या ग्लोबल आईआर?" ग्लोबल साउथ रिव्यू 2

5. बैरोक्लोफ़, डायना, केविन गैलाघर, और रिचर्ड कोज़ुल-राइट, (2021) दक्षिणी नेतृत्व वाला विकास वित्त: वैश्विक दक्षिण से समाधान . लंदन: रूटलेज,

6. बाउमन,मैक्स-ओटो,"हमेशा उत्तर-दक्षिण? संयुक्त राष्ट्र विकास प्रणाली में सुधार की राजनीतिक चुनौतियाँ।" थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली

7. बर्गर, टोबियास (2020) "एक रिलेशनल श्रेणी के रूप में 'ग्लोबल साउथ': कानून और कानूनी बहुलवाद के उत्पादन में वैश्विक पदानुक्रम।" थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली

8. बिएलर, एंड्रियास और जोर्ग नोवाक (2021)"ग्लोबल साउथ में श्रम संघर्ष: एक परिचय।" वैश्वीकरण

9. बोटका, मैनुएला (2021)"लॉन्ग ड्यूरे में असमान संस्थाएँ: दक्षिणी लेंस के माध्यम से नागरिकता।" थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली

10. ब्रेवबॉय-वैगनर, जैकलीन, एड.(2016) ग्लोबल साउथ में राष्ट्रों की कूटनीतिक रणनीतियाँ: नेतृत्व की खोज । न्यूयॉर्क, एनवाई: स्प्रिंगर,

11. ब्रेवबॉय-वैगनर, जैकलीन,(2018)"ग्लोबल साउथ का विचार: सामग्री की सीमाएँ और कल्पना की आवश्यकता।" वर्किंग पेपर,